ISSN 2581-9917

वैश्वीकरण के दौर में हिंदी नवगीत

सत्यम भारती*

शोध-सार

वैश्वीकरण के आगमन के फलस्वरूप हिंदी नवगीत की संवेदना और शिल्प पर सकारात्मक और नकारात्मक प्रभावों को रेखांकित करना इस शोध-आलेख का मुख्य उद्देश्य है। वैश्वीकरण के कारण हिंदी नवगीतों की विषयवस्तु व कहन में काफी परिवर्तन आया है,जिसका मूल्यांकन आवश्यक है। वैश्वीकरण के बाद वैश्विक काव्य वैचारिकी और भारतीय काव्यशास्त्र का सुंदर समन्वय हिंदी नवगीत में हुआ हैं, जिसका तुलनात्मक अध्ययन करना इस आलेख का मुख्य ध्येय है।

बीज-शब्द

वैश्वीकरण, उपभोक्तावाद, बाजारवाद, उदारीकरण, निजीकरण, पूंजीवाद, साम्राज्यवादी वर्चस्व, अफवाह, सूचनाक्रांति, मुक्त व्यापार, मंडीतंत्र, बहुराष्ट्रीय कंपनियां, कालाबाजारी, नेस्टोलजिया, फ्लैट-क्लचर, रीमिक्स-संस्कृति, ग्लोबल गांव, ग्लोबल-वार्मिंग, संरचनावाद, उत्तर आधुनिकता, अस्तित्ववाद, वसुधैव कुटुम्बकम आदि।

शोध-आलेख

वैश्वीकरण का मुख्य उद्देश्य-विश्व की अर्थव्यवस्था को एकत्रित करके स्वतंत्र और मुक्त व्यापार की नीति को अपनाना है। विश्व के समस्त भूमंडल को व्यापार और सूचना के मामले में एकीकृत करना ही वैश्वीकरण है, जिसे वैश्वीकरण भी कहा जाता है। प्रो. के. मनस्वी कहते हैं-'उदारीकरण, आर्थिक विकास एवं निजीकरण के सामंजस्य की विश्वस्तरीय प्रक्रिया ही वैश्वीकरण है।' विकिपीडिया से) तकनीकी ज्ञान का विस्तार, उदारीकरण, बाजारवाद, सूचना क्रांति, संचार का विकास, निजीकरण, पूंजी का विस्तार आदि वैश्वीकरण को प्रोत्साहित करने वाले कारक हैं। 1991 ई. में सोवियत संघ रूस के विघटन होने के बाद इसका वैश्विक पटल पर उदय होता है। भारत में नई आर्थिक नीति 1991 को भारत के प्रधानमंत्री पी. वी. नरसिम्हा राव द्वारा लागू किया गया, जिसे एलजी मॉडल के नाम से भी जाना जाता है। एलपीजी का अर्थ है- उदारीकरण, निजीकरण और वैश्वीकरण। वैश्वीकरण समस्त भारतीय समाज को प्रभावित किया है, जाहिर सी बात है कि साहित्य, संस्कृति तथा कविता तो प्रभावित होती ही। वर्तमान हिंदी नवगीत की विषयवस्तु, भाषा-शिल्प, संवेदना, कहन और मुहावरे में जो बदलाव आया है वह इसी वैश्वीकरण का नतीजा है। 1990 ई. के पहले के नवगीत और वैश्वीकरण के बाद नवगीत में

* शोध छात्र, हिन्दी साहित्य विभाग
महात्मा गांधी अंतर्राष्ट्रीय हिन्दी विश्वविद्यालय, वर्धा, महाराष्ट्र।

काफी अंतर देखने के लिए मिलता है। इस शोध आलेख का मुख्य उद्देश्य हिंदी नवगीत पर वैश्वीकरण के सकारात्मक और नकारात्मक दोनों प्रभाव को रेखांकित करना है।

वैश्वीकरण के आगमन के फलस्वरूप मशीन और तकनीक के विकास होने से मनुष्य का कार्य आसान हो गया है। बाजारवाद और सूचनाओं के तंत्र के विकास होने से आमजनों की पहुंच आसान हो गई है, अब हम घर बैठे देश-दुनिया की बात आसानी से जान जाते हैं। बहुराष्ट्रीय कंपनियों के आगमन से पूंजी का चतुर्दिक विकास हुआ और बाजार का विस्तार हुआ है। सोशल मीडिया के आने से कोई भी व्यक्ति अपनी निज विचार जनमानस के सामने आसानी से रख सकता है। वैश्वीकरण के आगमन से अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता को और बल मिला है। उत्तर-आधुनिकतावाद महावृत्तांत के अन्त की घोषणा करता है, जिससे हमारे साहित्य में अस्मितावादी विमर्शों का प्रादुर्भाव हुआ। हिंदी नवगीतों में उपस्थित विमर्श- स्त्री विमर्श, दलित विमर्श, आदिवासी विमर्श, वृद्ध विमर्श, किन्नर विमर्श, अल्पसंख्यक विमर्श आदि वैश्वीकरण के आगमन के फलस्वरूप और भी सुदृढ़ होते जा रहे हैं। मोबाईल और इंटरनेट के आविष्कार होने से मनुष्य का काम बहुत ही आसान हो गया है। ई-कॉमर्स और आनलाईन कार्ययोजना से बहुत हद तक भ्रष्टाचार पर भी प्रतिबंध लगा है। भारतीय संस्कृति और शिक्षा का पाश्चात्य शिक्षा और संस्कृति के मेल होने से साहित्य, संस्कृति और शिक्षा उन्नत हो रही है और इसका प्रचार-प्रसार हो रहा है। वैश्वीकरण के सकारात्मक प्रभावों का उल्लेख हिंदी नवगीतों में विपुल मात्रा में उपलब्ध है।

मुक्तबाजार, मंडीतंत्र, परस्पर प्रतिस्पर्धा, विज्ञापन, लघु व कुटीर उद्योगों का ह्रास, रोजगार की अनिश्चित, बेरोजगारी, ग्लोबल-वार्मिंग, लोक संस्कृति का विलुप्तीकरण, रिश्तों में बिखराव, लोक भाषा और भारतीय संस्कृति का पतन आदि वैश्वीकरण के प्रभाव का ही नतीजा है। हिंदी नवगीतों की संवेदना पर वैश्वीकरण का प्रभाव व्यापक रूप से देखा जा सकता है। ग्लोबल गांव ने सारे रिश्ते-नाते को स्वार्थपरक बना दिया है। समाज में संयुक्त परिवार का विघटन और पीढ़ीगत संघर्ष प्रारंभ हो गया है, जिसका परिणाम यह हुआ कि लोग अपने जड़ों से उखड़ने लगे हैं। विद्यानंद राजीव का यह नवगीत लोगों को अपने जड़ से उखड़ने तथा समाज से विस्थापित होने के कुप्रभावों को प्रस्तुत करता है-

नगर की बेहद नशीली
नित्य आयातित हवाएं
गांव को भरमा रही हैं
पीढ़ीयों की
पूर्व अर्जित संपदा पर
गिद्ध दृष्टि जमा रही हैं
लोग मिट्टी की महक को
दे रहे वनवास
चुप कैसे रहूंगा(1)

वैश्वीकरण के कारण आज हमारे आंगन तक बाजार का आगमन हो गया है। बाजारवाद व मशीनीकरण के बढ़ते वर्चस्व के कारण हमारे समाज में लघु उद्योग, शिल्प उद्योग, हस्तशिल्प, मूर्ति कला, मिट्टी के बर्तन, बुनाई, कुटीर उद्योग तथा छोटे व्यापार लगभग बंद हो चुके हैं। बाजार ने समाज में प्रतिस्पर्धा और विज्ञापन का दौर ला दिया है जिससे लघु उद्योगों का वजूद लगभग खत्म होने लगा है। मॉल संस्कृति, मंडीतंत्र, चकाचौंध, मुक्त बाजार, समन्वित अर्थव्यवस्था तथा पूंजी का विस्तार इन सब के प्रमुख कारण माने जा सकते हैं, जिससे छोटे व्यापारी बेरोजगार हो रहे हैं। हिंदी नवगीत अर्थव्यवस्था में आये इस बदलाव को सशक्त

तरीके से उजागर करता नजर आता है। 'आज समकालीन गीतों में ग्राम्य-जीवन, मजदूर, किसान, शोषण, दमन, बाजारवाद, वैश्वीकरण, आर्थिक उदारीकरण, उपभोक्तावाद, सांप्रदायिकता विरोध, आतंकवाद विरोध, दलित चेतना, स्त्री विमर्श जैसे आज की तमाम ज्वलंत समस्याओं की जटिल अनुभूतियों की अभिव्यक्ति समकालीन गीतों में सफलतापूर्वक हो रही है।'(2) हिंदी नवगीतों में बाजारवाद के बढ़ते वर्चस्व, स्वार्थपरक नीतियां, परस्पर प्रतिस्पर्धा, संवेदनशून्यता, मांग और जरूरत के हिसाब से मानवीय नीतियों में आये बदलाव आदि का उल्लेख हो रहे हैं-

कपड़ा बुनकर, थैला लेकर
मंडी चले कबीर
जोड़ रहे हैं रास्ते भर वे
लगे सूत का दाम
ताना-बना और बुनाई
बीच कहां विश्राम
कम-से-कम इतनी लागत तो
पाने हेतु अधीर...
कोई नहीं तिजोरी खोले
होती जाती शाम
उन्हें पता है कब बेचेंगे
औने-पौने दाम
रोटी और नमक थैलों को
बाजारों की खीर
मंडी चले कबीर। (3)

एक नवगीत की कुछ पंक्तियां और देखें-

बिस्तर पर जापान बिछा है
अलमारी में चीन
खाने की मेजों पर बैठा
अमेरिकी नमकीन
बीमा, बैंक
विदेशी हैं अब
हम कौड़ी के तीन। (4)

यांत्रिकता और मशीनीकरण के बढ़ते वर्चस्व के कारण हमारे देश में बेरोजगारी एवं प्रवास की समस्या उत्पन्न हो रही हैं। मशीनों की अंधाधुंध विकास इस तरह से हो रहा है की प्रकृति की वजूद को ध्यान में नहीं रखा जा रहा है। यंत्रों का वर्चस्व मानवीय अस्तित्व पर अब सवाल खड़ा कर रहा है-

आधुनिक संस्कृति का जो दैत्य
कीटनाशक दवाएं बनाता है

वही विषैली गैसों के बम भी बनाता है
जहर सबको मारता है
उसे कीट और मानव में फर्क करना नहीं आता। (5)

उद्योग-धंधे और कल कारखानों के बढ़ते वर्चस्व के कारण खेती योग्य भूमि को बंजर बना दिया जा रहा है। जिस खेत में हर साल धान व गेहूं के फसल लहलहाते थे, वहां अब शहरों का विकास हो रहा है। जाहिर-सी बात है किसानों की आर्थिक स्थिति काफी दयनीय होती जा रही है। जो किसान खेती कर रहे हैं, मंडीतंत्र के विकास होने से उन्हें अपने फसलों का उचित दाम नहीं मिल पा रहा है। बिचौलिया और कालाबाजारी का धंधा किसानों का हाल-बेहाल कर दिया है। किसानों की दयनीय स्थिति व उनकी आर्थिक परिस्थिति का सजीव चित्रण हिंदी नवगीतों में मिल जाता है। नवगीतों में किसान जीवन के प्रति गहन संवेदना तथा कृषक गृहणियों के प्रति सत्कार एक साथ अभिव्यक्त हो रहा है। उदाहरण के लिए-

बैल मरो है जबसे झुनिया के बाग कौ जी
कुरता बानौ नाहिं, बहना पूरे नाम कौ जी
एजी कोई बीतेगौ
हम्बै कोई बीतेगौ ऐंसेई फागु
अपन परिगे झूला बैरी बाग में जी।(6)

किसानों की भूमि छिन जाने का यह परिणाम हुआ कि अब किसान, शहरों में जाकर मजदूर बनने पर विवश हो रहे हैं। शहरों में मजदूरों का हुजूम बढ़ता ही जा रहा है। जिससे शहरी गरीबी और प्रवासी मजदूरों की समस्याएं इस देश में लगातार बढ़ती जा रही हैं। नवगीतों में इस ज्वलंत समस्या के प्रति तत्वतरू संधान मिलता है-

फुटपाथ की दीवारों पर
कीलों से जड़ दिया गया हूं
नंगी सुबहें, भूखी शामें
पहरा देतीं मुझको घेरे
व्यर्थ हो गईं तब रोशनियां
बेमानी हो गए अंधेरे। (7)

ग्लोबलाइजेशन, बाजारवाद, निजीकरण व उदारीकरण का यह परिणाम हुआ कि हमारे समाज में स्टेटस सिंबल, प्रतिस्पर्धा, कृत्रिमता, विज्ञापन और चकाचौंध की भावना जगने लगी। प्रभाकर श्रोत्रिय इस उपभोक्तावादी संस्कृति के बारे में विस्तार से लिखते हैं- 'आज सबसे बड़ा संकट वैश्वीकरण के नाम पर सांस्कृतिक संक्रमण का है। इस यांत्रिक युग में पदार्थ जगत की चिंतन प्रक्रिया में मनुष्य की सोच को भी विघटित एवं जड़वत बना दिया है। यह उपभोक्तावादी लोभ के केंद्र में स्थित मनुष्य का जीवन गणितीय मिथक बनकर शंकालु एवं असुरक्षित भावना से प्रताड़ित है। यह वैश्वीकरण जो पूंजीवादी साम्राज्यवाद के पांसे खेलकर वैश्विक अर्थव्यवस्था को खोखला कर रहा है और लोगों की हरीतिमा पर मीठे जहर के छींटे डालकर सब कुछ छीनने को बेताब है।'(8) हिंदी नवगीतों में समाज के बदलते इस परिदृश्य, आधुनिक जनजीवन के मायने व रिश्तों में होने वाले बिखराव का नवीन भाषा, बिंब एवं प्रतीक के माध्यम से प्रस्तुति की जा रही है-

एक से बढ़कर
एक ब्रांड है

यूथ नाम पर बिकते
बड़ी उम्र के
मुंह बिचकाते
जैसे चिथड़े लगते
स्टेटस के सिंबल। (9)

एक पंक्ति और देखें-

मंच पर ये दृश्य-
दिखता त्रासदी का
मिला यह तोहफा
विरासत में सदी का। (10)

ग्लोबलाइजेशन के आगमन के फलस्वरूप पाश्चात्य संस्कृति का विकास हुआ और वह धीरे-धीरे भारत में भी अपना पैर फैलाने लगा है। भारतीय संस्कृति, परंपरा, सभ्यता, लोक, वेशभूषा, खानपान आदि का लोप प्रारंभ हो गया है। जड़ से कटे लोग स्टेटस सिंबल और चकाचौंध में वशीभूत हो गए। अजनबीपन, स्वार्थपरक रिश्ते, प्रतिस्पर्धा, एकालाप, संवाद का अभाव, आत्महत्या, मनोग्रंथि, कुंठा, संत्रास, हताशा, नेस्टोलजिया आदि समाज के अंदर एक-के-बाद एक आता चला गया। इन सारे तथ्यों का नवगीतों में उल्लेख मिलता है, नवगीत आधुनिक मूल्यबोधों का संवहन करने वाला एक उत्कृष्ट विधा बनता जा रहा है-

जी रही संदेह, हर दिन
सभ्यता ही हुई शक्की
नाक पर बैठी हुई है
एक संस्कृति, एक मक्खी
सीढ़ियां टूटी हुई सी
चढ़ रहे, बस चढ़ रहे हैं। (11)

एक नवगीत की कुछ पंक्तियां और देखें-

लंबी प्यास, मुखौटे चेहरे
सूखी हंसी, ढोंग-मुस्कानें
हिलते हाथ, थके संबोधन
अजनबियत, भूली पहचाने
जलती आंख, सुलगते सपने
हाथ तापते हुए आदमी। (12)

कालाबाजारी, मंडीतंत्र, मुक्त व्यापार, पूंजी का वर्चस्व, मांग और आपूर्ति तथा उभोक्तावादी संस्कृति ने महंगाई को आसमान पर पहुंचा दिया है। महंगाई की व्याधि दिनों-दिन बढ़ती ही जा रही है। महंगाई गरीब और मिडिल क्लास के जनजीवन को काफी प्रभावित किया है, यही कारण है उनके प्रति संवेदना नवगीतों में मिल जाता है-

घिरी घटायें घोर घटाएं
कर रहा
अब मौसम मनमानी
दुर्लभ दालें
नोन-तेल का
भाव न पूछो भैया
लदा शीश पर कर्ज
बिक गयी
बची अकेली गैया
आटा गीला कंगाली में
बिना दाल की है हांडिया
क्या ओढ़े
क्या करें बिछावन
बिना गोदड़ी खटिया
छाम पुरानी
टूटा छप्पर
टपक रहा है पानी। (13)

अत्यधिक वनों की कटाई, पर्यावरण प्रदूषण, कल-कारखानों का विस्तार, फ्लैट क्लचर का आगमन, खेती योग्य भूमि का संकुचन और पूंजी के विस्तार होने से हमारे यहां पर्यावरण प्रदूषण की समस्याएं उत्पन्न हो रही है। ग्लोबल-वार्मिग, सुनामी, भूकंप, बाढ़, भूस्खलन, प्रदूषण, अम्लीय वर्षा, ओजोन परत का विनाश, समय पर मौसम का ना बदलना, बादल फटना, ज्वालामुखी विस्फोट आदि पर्यावरणीय समस्याएं आज विकट होती जा रही हैं। अगर हम समय रहते नहीं चेते तो यह समस्याएं और भी गंभीर होती जायेंगी। कोरोना की भयावता से कौन बाकी नहीं है? हिंदी नवगीत में पर्यावरण बचाने की ललक तथा मानवों के द्वारा प्रकृति पर किया गया अत्याचार का स्पष्ट उल्लेख मिलता है-

सुनो, तथागत
एक नया युग आने वाला है
पेड़ मरेंगे
और तुम्हारा बोधि वृक्ष भी
नहीं रहेगा
अगला युग तो
हरियाली की
पोथी वाली बात कहेगा
तितली की
असली नस्लों का रंग भी काला होगा। (14)

हिंदी नवगीतों में पर्यावरण के प्रति आस्था, विश्वास, आशा तथा उसे बचाने के लिए किये जाने वाले प्रयासों का सजीव चित्रण मिलता है-

बदले में मनुष्य
क्या सौंपता है सौगात?
तरह-तरह के जहर
हर तरह की मलिनता
और निरंतर खौलता तेजाब
एक कपूर की
मां की तरह वसुधा इन सौगातों को
अपने आंचल में सहेज लेती है। (15)

एक पंक्ति और देखें-

जंगल से आया है समाचार
कट जाएंगे सारे देवदार
देवदार हो गए पुराने हैं
पेड़ नहीं भूतहे तहखाने हैं
उन बूढ़ी आंखों को क्या पता
पापलरों के नए जमाने हैं
रहलें वे तली बने शिकारे की
अश्वत्थामाओं में हो शुमार। (16)

वर्चस्ववादी दौर में हर देश अपना वर्चस्व, पूंजी का विस्तार तथा बाजार की फलक बढ़ाना चाहता है। ऐसे में पूंजीपति व साम्राज्यवादी देश हथियारों का व्यापार प्रारंभ कर दिये हैं। जिससे शीतयुद्ध और गृहयुद्ध जैसी समस्याएं उत्पन्न हो रही हैं। आतंकवाद का बढ़ता वर्चस्व और मानवों का अस्तित्व का मिट्टी होना इसी वर्चस्ववादी संस्कृति का परिणाम है। रूस-यूक्रेन युद्ध, भारत-पाकिस्तान युद्ध, ईरान- फिलिस्तीन युद्ध आदि इसका दुष्परिणाम माना जा सकता है। हिंदी नवगीत न सिर्फ भारतीय बल्कि वैश्विक परिदृश्य में होने वाली घटनाओं पर नजर रखता है और उसकी भयावहता का मूल्यांकन करता है-

कंधों पर धरे हुए खूनी यूरेनियम
हंसता है तम
युद्धों के मलबों से
उठते हैं प्रश्न
और गिरते हैं हम। (17)

इसतरह हम देखते हैं कि हिंदी नवगीत की संवेदनाओं का विस्तार हुआ है, खास करके वैश्वीकरण के आगमन से। पर्यावरण प्रदूषण, आतंकवाद, युद्ध की विकट समस्या, भूख, किसान-मजदूरों की दयनीय स्थिति, प्रवास की समस्या, शहरी गरीबी, लघु व कुटीर उद्योगों का ह्रास, कोरोना की भयावता, लोक संस्कृति का पतन, अजनबीपन, टूटते-बिखरते रिश्ते, नैतिक मूल्यों का पतन आदि आधुनिक मूल्यबोधों का समावेश हिंदी नवगीतों में मिल जाते हैं, जो एक सकारात्मक पहल माना जा सकता

है। डॉ. नामवर सिंह लिखते हैं- 'नवगीत में गीतकाव्य को सिर्फ भाषा, शिल्प और छंद की नवीनता ही नहीं प्रदान की है, बल्कि उसकी अंतर्वस्तु को युगानुरूप सामाजिक चेतना देकर उसको प्रासंगिकता भी प्रदान की है। उसमें युग बोलता है, उसमें वर्तमान समय की धड़कनें सुनाई पड़ती हैं।'(18)

जैसे-जैसे समाज की संवेदना बदलती है वैसे-वैसे उसे अभिव्यक्त करने के तौर-तरीके भी बदलते हैं। हिंदी नवगीत के शिल्प, भाषा, प्रतीक, मुहावरे, बिंब आदि में व्यापक बदलाव देखने के लिए मिल रहा है। भाषा में जहां अंग्रेजी व बोलचाल की मिश्रित शब्दों का वर्चस्व बढ़ता जा रहा है, वहीं वाक्यों का संगठन काफी सरल होता जा रहा है। नए जमाने की संवेदना को अभिव्यक्त करने के लिए भाषा व शिल्प में बदलाव तो लाजमी था। डॉ. राजेंद्र गौतम लिखते हैं- 'नवगीतकार ने पारंपरिक गीत की भाषा को ही नहीं बदला है, उसमे स्वयं अपने मुहावरे और सांचे को अपर्याप्त प्रकार बार-बार तोड़ा है और नए सांचे का निर्माण किया है। काव्यभाषा की यह मौलिकता और जीवंतता नवगीत के शिल्प की ताजगी का आधार है।'(19)

उत्तर-आधुनिकता के आगमन का प्रभाव वैश्विक साहित्य पर पड़ा। ग्लोबलाइजेशन के प्रभाव से काव्य की वैचारिक पटल पर काफी बदलाव नजर आए। संरचनावाद जहां साहित्य शाब्दिक संरचना पर बल देता है तो वहीं उत्तर संरचनावाद मूल पाठ पर। हिंदी नवगीत विषय वस्तु और शाब्दिक संरचना दोनों के प्रति काफी सशक्त और उदार नजर आता है। विक्टर कजिन का सिद्धांत 'कला कला के' लिए तथा एजरा पाउंड के बिंबवाद से भी हिंदी नवगीत काफी प्रभावित नजर आता है। हिंदी नवगीत पर भारतीय व पाश्चात्य काव्य सिद्धांतों का प्रभाव देखा जा सकता है। वह कला के साथ भी है और कला के बाद भी है। हिंदी नवगीतों के प्रतीक व बिंब भाव प्रबलता लिए हुए हैं और समय के अनुरूप व प्रसंगवश परिवर्तनशील हैं। कुछ वैज्ञानिक प्रतीक का उदाहरण देखें-

गंगाजल! आंसू की बूंद
पीकर ही! रश्मियां उगाई
दुखियारी पलकों को मूंद
भीतर ही डुबकियां लगाई
सारा ईमान खींच लाए
अम्ल में भिगोकर
हमने तो धुंधले दिन उजलाए (20)

निष्कर्षतः यह कहा जा सकता है कि वैश्वीकरण का सकारात्मक और नकारात्मक जो भी प्रभाव भारतीय समाज पर पड़ा है, उसे हिंदी नवगीत अभिव्यक्त करने में सफल हो रहा है। वैश्वीकरण, बाजारवाद, उदारीकरण, पूंजी का वर्चस्व, मुक्त व्यापार, सूचना व तकनीकी क्रांति, ग्लोबल गांव, मंडीतंत्र आदि के आगमन से हिंदी नवगीत की संवेदना व शिल्प दोनों में व्यापक परिवर्तन देखा जा सकता है। भाव पक्ष में जहां नये-नये विषय का आगमन और उसका विस्तार हुआ; वहीं शिल्प पक्ष में भाषा, प्रतीक, बिंब, मुहावरे तथा वाक्य संरचना में बदलाव आया है। 1990 ई. के पहले नवगीत का विस्तार कुछ सीमित क्षेत्रों तक ही था लेकिन वैश्वीकरण के बाद हिंदी नवगीत मानव का, मानव के लिए तथा मानव के द्वारा संचालित एक उन्नत, सशक्त और उत्कृष्ट विधा बन गया है, जिसे वैश्वीकरण का सकारात्मक प्रभाव माना जा सकता है। यथार्थवादी दृष्टिकोण, सर्वात्म मानवतावाद, वसुधैव कुटुम्बकम, कर्मयोग आदि को अपना आधार मानने वाला हिंदी नवगीत वर्तमान भारतीय संस्कृति को बचाने के प्रति उत्साहित नजर आ रहा है। हिंदी नवगीत न केवल समस्याओं को रेखांकित करता है बल्कि वह उन समस्याओं से मानवों को बाहर निकलने का मार्ग भी बतलाता है। वैश्वीकरण के बाद हिंदी नवगीतों की संवेदना, विषयवस्तु, अभिव्यक्त करने के तौर-तरीके तथा वाक्य संरचना में कई बदलाव आए हैं जो उसके उत्कृष्टता का द्योतक है।

सन्दर्भ ग्रंथ

1. छीजता आकाश : विद्यानंद राजीव, इंदु प्रकाशन अलीगढ़, 1984,पृष्ठ संख्य- 51
2. प्रतिरोध में खड़ा समकालीन गीत : नचिकेता, बेस्ट बुक बडिज प्रकाशन नई दिल्ली, 2019, पृष्ठ संख्या- 115
3. मंडी चले कबीर : अवध बिहारी, द्वितीयक स्रोत, नवगीत मूल्यबोध और प्रतिरोध, श्वेतवर्णा प्रकाशन नई दिल्ली, 2001, पृष्ठ संख्या- 61
4. रथ को इधर मोड़िए : बृजनाथ श्रीवास्तव, पृष्ठ संख्या 78
5. समकालीन नवगीत का विकास : डा. राजेश सिंह, वाणी प्रकाशन नई दिल्ली, 2010, पृष्ठ संख्या- 133
6. इतिहास दुबारा लिखो : रमेश रंजक, सुखदा प्रकाशन नई दिल्ली, 1977, पृष्ठ संख्या- 61
7. जहां दर्द नीला है : शंभुनाथ सिंह, पृष्ठ संख्या- 09
8. द्वितीयक स्रोत, नवगीत मूल्यबोध और प्रतिरोध : मधुकर अष्ठाना, श्वेतवर्णा प्रकाशन नई दिल्ली, 2021, पृष्ठ संख्या- 62
9. द्वितीयक स्रोत, समकालीन नवगीत का विकास : नचिकेता, श्वेतवर्णा प्रकाशन नई दिल्ली, पृष्ठ संख्या- 126
10. उजाड़ में परिंदे : नईम, भारतीय ज्ञानपीठ प्रकाशन, नई दिल्ली, 2011, पृष्ठ संख्या- 133
11. त्रिकाल संध्या के गीत : सं. शुभम श्रीवास्तव, श्वेतवर्णा प्रकाशन नई दिल्ली, 2023, पृष्ठ संख्या- 25
12. भीतर सांकल बाहर सांकल, डा. कुंअर बेचैन, प्रगति प्रकाशन नई दिल्ली गाजियाबाद, 1978, पृष्ठ संख्या- 23
13. नवगीत मूल्यबोध और प्रतिरोध : मधुकर अष्ठाना, श्वेतवर्णा प्रकाशन नई दिल्ली, 2021, पृष्ठ संख्या- 62
14. सुनो तथागत रू कुमार रविन्द्र, द्वितीयक स्रोत, प्रतिरोध में खड़ा समकालीन गीत,वही, पृष्ठ संख्या- 111
15. क्रौंचवध के विरोध में : वेद प्रकाश अमिताभ, लिथो कलर प्रिंटर्स अलीगढ़, पृष्ठ संख्या-68
16. गुनगुनाएं गीत फिर से-03, सं. राहुल शिवाय, कविता कोश प्रकाशन नई दिल्ली, 2020, पृष्ठ संख्या- 79
17. श्रेष्ठ हिंदी गीत संचयन : सं. कन्हैयालाल नन्दन, साहित्य अकादमी नई दिल्ली, 2021, पृष्ठ संख्या- 31
18. नामवर सिंह, द्वितीयक स्रोत, वही पृष्ठ संख्या- 115
19. नवगीत की पृष्ठभूमि : मधुकर अष्ठाना, द्वितीयक स्रोत, श्वेतवर्णा प्रकाशन नई दिल्ली, 2020,पृष्ठ संख्या- 211
20. गीत विहग उतरा : रमेश रंजक, सुखदा प्रकाशन नई दिल्ली, पृष्ठ संख्या- 17

❖❖❖❖